International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 20-04-2019; Accepted: 22-05-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 4; July 2019; Page No. 36-37

600 ई०पू० से मौर्य काल तक का धार्मिक स्वतंत्रता

Amit Kumar Gupta
Research Scholar, Department of History, B.R. Ambedkar Bihar University, Muzaffarpur, Bihar, India

प्रस्तावना

प्राचीन भारत में 600 ई. पू. से मौर्य वंश तक के काल का अगर धर्म के स्वतंत्रता का अध्ययन किया जाए तो इसमें कुछ विशिष्टता नजर आता है। यह विशिष्टता व्यक्तिगत स्वतंत्रता का बोध कराता है। चूकी तत्कालिक भारत में अनेक संप्रदाय का उदय हो चुका था। जिसमें ब्राह्मण धर्म के अन्तर्गत शैव, वैष्णव थे तो नास्तिक सम्प्रदाय के तहत जैन एवं बौद्ध प्रमुख थे। कुछ अन्य भौतिकवादी चिन्तन का विकास भी हो चुका था। अगर हम इस प्राचीन समय का विशिष्ट अध्ययन करें तो समाज में एक विशिष्ट धार्मिक स्वतंत्रता का बोध होता है।

वैदिक काल के पश्चात् भारत में धार्मिक विविधता का काल था जिसमें कई संप्रदाय का उदय हो गया था। इन सभी संप्रदाय में समाज के विभिन्न लोगों का सहभागिता थी। यही तथ्य धार्मिक स्वतंत्रता का प्रथम आधारभूत तत्व था। जिसके अन्तर्गत समाज के विभिन्न वर्ग व्यापक रूप में ब्राह्मण संप्रदाय को त्याग कर अन्य संप्रदाय को अपनाया। प्राचीन काल के समाज के लोग न सिर्फ अन्य संप्रदाय को अपनाया अपितु वे अपने आस्था के इत्तर दूसरे संप्रदाय का सम्मान किया एवं उसमें बढ़–चढ़ कर भागिदार बने।

सर्वप्रथम सूत्र काल (6वीं शताब्दी ई. पू.) में धार्मिक सद्भावना का प्रथम उदाहरण मिलता है। जिसके अन्तर्गत बिहार के बैठद्वीप के ब्राह्मण का उदाहरण विशिष्ट है। महापरिनिर्वाण सूत्र के अनुसार बुद्ध की मृत्यु के बाद उन्होंने उनके अवशेषों का एक भाग प्राप्त किया था तथा उस पर स्तूप का निर्माण करवाया था। यह बात यह स्पष्ट करती है कि उस काल के ब्राह्मणों की आस्था महात्मा बुद्ध में थी। अपने सद्भावना एवं स्वतंत्रता के अन्तर्गत उन्होंने स्तूप का निर्माण करवाया।

कालांतर में यह धार्मिक प्रखरता अधिक विकसित होकर नजर आती है। प्राचीन काल में विभिन्न शासकों का व्यक्तिगत धर्म अलग–अलग था। अर्थात् एक ही परिवार के विभिन्न सदस्यों का धर्म अलग–अलग था। यह विशेषता प्राचीन काल की सबसे विशिष्ट विशेषता था जो आज के आधुनिक काल में नजर नहीं आती।

व्यक्तिगत रूप से देखा जाए तो सर्वप्रथम विम्बसार को ले सकते हैं। विनयपिटक से ज्ञात होता है कि बुद्ध से मिलने के बाद बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया तथा वेणुवन नामक उधान बुद्ध तथा संघ के निमित्त प्रदान कर दिया। किन्तु वह जैन तथा ब्राह्मणों के प्रति भी सहिष्णु रहा। इसका पुत्र अजातशत्रु की धार्मिक नीति भी उदार थी। बौद्ध तथा जैन दोनों ही ग्रन्थ उसे अपने–अपने मत का अनुयायी मानते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि पहले वह जैन धर्म से प्रभावित था, परन्तु बाद में बौद्ध हो गया। अजातशत्रु के बाद उसका पुत्र उदयभद्र मगध का राजा हुआ। आवश्यक सूत्र से पता चलता है कि वह जैन मतानुयायी था। वह नियमित रूप से व्रत करता तथा आचार्यों के उपदेश सुनता था।

हर्यक वंश के उपरांत नंद वंशों का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि नंद शासक जैनमत के पोषक थे। मुद्राराक्षस से भी नन्दों का जैनमतानुयायी होना सूचित होता है। मौर्य काल में भी व्यक्तिगत धार्मिक स्वतंत्रता एवं धार्मिक सद्भाव चलता रहा। चन्द्रगुप्त मौर्य व्यक्तिगत रूप से जैन संप्रदाय को मानने वाला था। वह एक धर्म–प्राण व्यक्ति था। जैन परम्पराओं के अनुसार अपने जीवन के अन्तिम दिनों में वह जैन हो गया तथा भद्रबाहु की शिष्यता ग्रहण कर ली। 298 ई.पू. के लगभग उसने जैन विधि से उपवास पद्धति द्वारा प्राण त्याग किया। इसे जैन धर्म में सल्लेखना कहा गया है।

थेरावाद के अनुसार बिन्दुसार ब्राह्मण धर्म का अनुयपायी था। दिव्यावादान से पता चलता है कि उसकी राज्यसभा में आजीवक सम्प्रदाय का एक ज्योतिषी निवास करता था। यहां यह बात ध्यान देने वलाी है कि चन्द्रगुप्त जो जैन था उसका पुत्र एक ब्राह्मण धर्म का अनुयायी था और साथ ही आजीवकों के प्रति उसका झुकाव था। आगे चलकर बिन्दुसार का पुत्र सम्राट अशोक अपने प्रारम्भिक वर्षों में ब्राह्मण धर्म का अनुयायी था। राजतंरगिणी के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वह भगवान शिव का उपासक था। अन्य हिन्दू शासकों की भाँति वह अपने रिक्त समय में विहार यात्राओं पर निकलता था जहां मृगया में विशेष रूचि लेता था। सिंहली अनुश्रुतियों – दीपवंश और महावंश के अनुसार अशोक को उसके शासन के चौथे वर्ष ''निग्रोध'' नामक सात वर्षीय भिक्षु ने बौद्ध धर्म में दीक्षित किया। तत्पश्चात् भोग्गलपुत्रतिस्स के प्रभाव में पूर्णरूपेण बौद्ध बन गया। दिव्यावदान अशोक को बौद्ध धर्म में दीक्षित करने का श्रेय उपगुप्त नामक बौद्ध भिक्षु को प्रदान करता है।

अगर हम इस पूरे घटनाक्रम का सूक्ष्म प्ररिक्षण करें तो इस काल में व्यापक रूप से व्यक्तिगत धार्मिक स्वतंत्रता ज्ञात होता है। एक ही परिवार के विभिन्न सदस्यों का अलग–अलग धर्म का उपासक होना एक विशिष्ट लक्षण का बोध कराता है। इस काल में न सिर्फ शासक वर्ग ही अपने धार्मिक स्वतंत्राता हेतु उन्मुक्त थे बल्कि पूरा समाज भी उन्मुक्त था। तभी तो इस काल में ब्राह्मण धर्म के अलावा विभिन्न नास्तिक संप्रदाय के साथ भौतिक चिंतकों का भी बोलबाला था। हलांकि इस स्वतंत्रता का विभिन्न कारण हो सकते हैं, परंतु यह इस रूप में अनोखा था कि व्यक्ति उन्मुक्त होकर धर्म बदलते थे और लोग उन्मुक्त होकर प्रत्येक धर्म को आदर देकर उनका सम्मान करते थे।

संदर्भ सूची

1. महापरिनिर्वाण सूत्र
2. विनय पिटक
3. आवश्यक सूत्र
4. मुद्राराक्षस : विशासदत्त
5. थेरावाद
6. दिव्यावादान
7. राजतंरगिणी
8. अनुश्रुतीः दीपवंश और महावंश
9. Altekar AS. K State and Government in Ancient India, 1949.
10. Bhatt Acharya. N.N. Jain Philosophy: Historical Autline, 1976.
11. Conze, Edward. Buddhist: Its Essaence and developpment.
12. Fick R. Social Organization of North Eastern India in Buddha's Time, 1920.